19.05.2020

Dr. purnima Singh
Department of Political Science
Indian political thought
Topic- M.N Roy - 1
Lecture - 39

M.N Roy - 1

भारत के समाजवादी चिन्तकों मे मानवेन्द्रनाथ रॉय का अनूठा स्थान रहा है। वे न केवल भारत मे समाजवाद के ही अग्रगण्य थे अपितु साम्यवाद के प्रसार और प्रचार के भी अग्रदूत रहे। भारत मे साम्यवाद का अध्ययन उन्हीं के नाम से प्रारम्भ होता है किन्तु जितनी प्रबलता से उन्होंने साम्यवाद का समर्थन किया उतनी ही प्रबलता से उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध मे उसका विरोध भी किया। जहां एक ओर एशिया तथा भारत को साम्यवाद का सन्देश उन्होंने दिया वहां दूसरी ओर उन्होंने सर्वप्रथम साम्यवाद की भर्त्सना कर सारे विश्व को मानववाद का सन्देश भी दिया। साम्यवाद की त्रिमूर्ति लेनिन, स्टालिन तथा ट्राटस्की के अत्यन्त निकट रह कर तथा मैक्सिको, चीन व भारत को साम्यवाद का मार्ग दिखाकर जिस तरह से मानवीय स्वातन्त्र्य का उद्घोष किया उसका दूसरा उदाहरण विश्व मे नहीं मिलता। यदि भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता - आन्दोलन से ऊपर उठकर विचार किया जाये तो यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि उनका नवमानववाद भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन की विश्व को एक अनुपम देन है।

रॉय सामाजिक समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखते थे। स्वतन्त्रता की मूलभूत प्रेरणा ने उन्हें एक ऐसा यथार्थवादी चिन्तक बना दिया जो अपने राजनीतिक चिन्तन मे वैज्ञानिक

एवं विवेकपूर्ण विचारों के स्रोत : स्रोत था। रॉय का भारत के बुद्धिजीवियों में अद्वितीय स्थान माना जा सकता है। उनका मानववाद मानवमात्र को स्वतन्त्रता का सन्देश देता है। रॉय की महानता केवल विचारों तक ही सीमित नहीं थी। वे व्यक्तिगत जीवन में स्पष्टवादी एवं निर्मल रहे।

रॉय के राजनीतिक विचार

मानवेन्द्रनाथ रॉय का राजनीतिक दर्शन दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला भाग उनके उन विचारों से सम्बन्धित है जब वे कट्टर मार्क्सवादी थे तथा दूसरा भाग उन विचारों से सम्बन्ध रखता है जब वे मार्क्सवाद के विरोधी बन गये अतः मार्क्सवाद को चुनौती देने के लिए उन्होंने नव मानववाद की स्थापना की। उनके राजनीतिक विचारों का पहला भाग उनकी मार्क्स-भक्ति का वर्णन करता है जो उनके उपर्युक्त वर्णित जीवन-परिचय से मिल जाता है। दूसरे भाग का विचार अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से उनका मौलिक राजनीतिक चिन्तन प्रारम्भ होता है।

रॉय के राजनीतिक विचारों में व्यक्ति को अत्यधिक महत्व दिया गया है। उनकी यह धारणा थी कि एक अच्छा व्यक्ति ही एक अच्छे समाज की रचना कर सकता है। वे व्यक्ति को ही समाज का आधार मानने लगे थे। उनका यह कथन था कि सदियों से राजनीतिक विचारकों ने व्यक्ति के महत्व को नहीं पहचाना। कालान्तर में नव-जागरण युग में ही व्यक्ति अपनी मौलिक स्थिति प्राप्त कर सका।

इसके साथ ही व्यक्ति का स्थान राज्य तथा समाज की तुलना में पुनरांकित हुआ। रॉय भी मार्क्सवादी प्रभाव के दिनों में व्यक्ति को राज्य की तुलना में दूसरे स्थान पर मानते रहे किन्तु मार्क्सवाद का प्रभाव दूर होने के बाद वे यह मानने लगे कि व्यक्ति का कार्य केवल आज्ञापालन ही नहीं अपितु अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखना भी है। इस तरह उन्होंने व्यक्ति को एक नागरिक के सम्मानित पद पर पुनः स्थापित किया। स्वतन्त्रता एवं कर्त्तव्य का व्यक्ति के जीवन में तालमेल बिठाया। वे सोचने लगे कि साम्यवादी तथा समाजवादी विचारकों ने व्यक्ति के आत्म-गौरव को ठेस पहुंचाई है। वे व्यक्ति के सामाजिक दायित्व तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता दोनों को समान स्थान देते थे। उन्हें पूंजीवाद की व्यक्तिगत स्वार्थपरायणता की नीति पसन्द नहीं थी। इससे उनकी यह धारणा भी बलवती हुई कि पूंजीवाद की स्वार्थ-वृत्ति ही अन्ततः पूंजीवाद को समाप्त कर देगी।

रॉय ने राज्य को केवल साधन माना साध्य नहीं। राजनीतिक दर्शन के दृष्टिकोण से वे राज्य को न तो एक आवश्यक बुराई ही मानते थे तथा न मार्क्स के समान राज्य के तिरोहित होने में ही उनका विश्वास था। वे राज्य की आवश्यकता एक अच्छे शासन के प्रदाता के रूप में आवश्यक समझते थे। उदारवादियों की भाँति रॉय भी राज्य को सामान्य हित साधन का उपकरण समझते थे। उन्हें राज्य के कठोर नियन्त्रण अथवा अधिनायकतन्त्र में विश्वास नहीं था। वे राज्य को पूर्णतया लोकतान्त्रिक आधार देना चाहते थे। उनकी दृष्टि में राज्य समाज का राजनीतिक संगठन है तथा

सत्ता के विकेन्द्रीयकरण द्वारा राज्य व समाज दोनों समकक्ष हो जाते हैं। वे राज्य को एक प्रति लोकतांत्रिक राज्य बनाना चाहते थे, जिससे संसदीय लोकतन्त्र तथा अधिनायकतन्त्र दोनों की बुराई से बचा जा सके। वे आर्थिक नियोजन को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से सम्मिलित कर अधिक प्रत्यक्ष लोकतन्त्र स्थापित करना चाहते थे। चूंकि उन्हें पूर्व तथा पश्चिम के देशों की राजनीतिक स्थिति का व्यक्तिगत अनुभव था, अतः वे ऐसा निदान प्रस्तुत कर रहे थे जिससे दोनों की ही समस्याओं का उपचार हो सके।

राय का यह विचार था कि राष्ट्रवाद भावुकता पर आधारित होने के कारण किसी भी वैज्ञानिक राजनीतिक चिन्तन का आधार नहीं बन सकता। वे राष्ट्रवाद के सिद्धांत को निरर्थक मानते थे।

राय अंतर्राष्ट्रवाद के प्रतीक थे। विश्व बन्धुत्व तथा विश्व-एकता में उनका विश्वास था। उनकी दृष्टि में इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि समस्त मानव संस्कृति का ही उद्गम है। वे मानते थे कि विश्व एकीकरण अवश्य स्थापित होगा। उन्होंने इस विचारधारा का इसलिए भी समर्थन किया कि इसके द्वारा आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा, गरीबी तथा बेकारी दूर की जा सकती है। यदि राष्ट्रीय राज्यों का स्थान एक विश्व-राज्य ले लेंगे। वे मानव व मानवता के बीच और किसी वस्तु को सहन नहीं कर सकते थे। इस तरह राय का उग्रमानववाद एक सच्चे अंतर्राष्ट्रवाद का प्रतीक तथा उसकी प्राप्ति का साधन है।